61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023

Kozhikode

Item Code: 6H5 Participant Code: 102

कोविड़ काल में बदला समाज

लोकडौन का समय था , सब लोग अपने घर के अंदर कैद , बच्चे विद्यालय नही जा पा रहे थे , दोस्तो से मुलाकात भी नही हो पा रही थी । डर के कारण । आखिर किससे?

कोविड़ - 19 एक छोटा सा वैरस जिसे हम देख भी नही सकते , जो माना जाता है कि चीन के कोई वुहान नामक शहर के एक वैरोलजी लाब से निकला था एक गलती के कारण । लेकिन इस छोटी सी गलती ने हमारे पूरे विश्व में तबाही मचा दी । इस विश्व के हरेक कोणे में कोविड़ तेजी से पहुँच रहा था । हरेक व्यक्ति अब वो चाहे अमीर हो या गरीब , बच्चे हो या बुजुर्ग , लड़का हो या लड़की - इस विश्व में मौजूद हरेक इन्सान को डर लगता था कोविड़ से ।

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

Item Code: 645 Participant Code: 102

कोविड़ के लक्षण थे - सर्दी, छुकाम, बुकार और खासी। कोविड़ -19 के आग जैसे फैलने पर हरेक देश ने लोकडौन घोषित कर दिया। जिनमें से एक था हमारा भारत देश।

ज्यादा तौर एक आदमी के जीवन से बहुत अलग था कोविड़ और लोकडौन समय का हमारा जीवन। हरेक इंसान को बहुत तकलीफ हुई लोकडौन के कारण लेकिन अपने आरोग्य के लिए यह सब करना बहुत ही ज्यादा ज़रूरी था। कोविड़ - एक बहुत ही खतरनाक वैरस है जो आज भी हमारे समूह में है। पूरी तरह से मिटा नही है कोविड़ हमारे समूह से।

कोविड़ के समय हरेक के जीवन में डर था और जैसे एक सिक्के के दो पहलू होते है - ठीक उसी तरह कोविड़ ने लाया बदलाव के भी दो पहलू थे।

नकारात्मक और सकारात्मक। कोविड़ से पहले लोग काम पर जाते थे, पैसा कमाते थे, बच्चे विद्यालय में जाते थे, पढ़ते, लिखते और खेलते थे। लेकिन कोरोणा नामक महामारी के कारण यह सब बदल गया।

गरीबी के पैसा समस्या था जो वैरस के समान ही हमारे समुह में फैल रहा था। कोविड़ से पहले जब लोग काम करने जाते थे तब उन्हें पैसा मिलता था। लेकिन लोकडौन के समय बहुत सारे लोगों की नौकरी चली गयी। उनके घर में पैसों का आना रुक गया क्योंकि उन्हें तंख्वा ही नही मिल रही थी। खेती और मजदूरी पर आश्रय लेने वाले लोगों को बहुत प्रश्नों को सामना करना पड़ा।

आरोग्य स्थिति में बदलाव। कोरोणा काल में घर में बैठे रहने से बच्चों और

उसके साथ -साथ घर में मौजूद अन्य लोगों का दिनचर्या ही पूरा बदल गया । बच्चे जो पढने के लिए और विदयालय जाने के लिए सुबह जल्दी उठते थे - उन्होंने अपने दिनचर्या को ही बदल डाला । देर से उठना एक समस्या बन गया था और उसके साथ - साथ भोजनक्रम में बदलाव भी आया । एक व्यक्ति के जीवन दिनचर्या और भोजनक्रम बहुत ही ज्यादा अनिवार्य है लेकिन कोविड के कारण लोगों में आलस पैदा होना शुरु हो गया ।

अपने आरोग्य स्थिति पर ध्यान न देना । व्यायाम एक व्यक्ति के जीवन में अत्युतम ज़रूरी है लेकिन कोविड के कारण लोगों में व्यायाम की कमी देख सकते थे । हालांकि कुछ लोग अपने आरोग्य पर खास ध्यान रखते थे लेकिन ज्यादातर लोगों को

घर से बाहर ना निकलने के कारण व्यायाम और खेल-कूद का अवसर नष्ट होता गया।

बुजुर्ग लोगों को कोरोणा के करण कुछ ज्यादा तकलीफ झेलनी पड़ी। जिन बुजुर्गों में पुरानी स्वास्थ्य स्थिथियाँ थी उन्हें जब वैरस के डर से घर के अंदर ही बैठना पड़ा तब शारिरिक और मानसिक तरीके से बहुत सारे प्रश्नों ~~ने उन्हें~~ को उन्हें सामना करना पड़ा।

ऐ.टी. क्षेत्र में काम करने वाले लोगों को घर पर यूही बैठना न पड़ा क्योंकि 'वर्क फ्रम होम' - घर में बैठकर काम करना' शुरु हो गया था। जिसमें तकनीकी ने बहुत मदद की। लेकिन लापटोप या फोन के सामने ज्यादा देर बैठने रहने से कुछ लोगों में डिप्रेशन जैसे स्वास्थ्य स्थितियाँ भी शुरु हो गयी।

विध्यार्थी समूह एक ऐसा समूह है

जिसको कोविड़ ने बहुत बुरे तरीके से परेशान करकर रख दिया। ज्यादातौर पर बच्चे सुबह उठकर जब नहा-धोकर, विद्यालय जाते थे, घृहकार्य करते थे, दोस्तों के साथ खेलते थे परीक्षा लिखते थे और जीवन में मज़ा करते थे। दूसरी तौर पर कोरोणा के कारण जब छुट्टी घोषित कर दिया था 2-3 महीने के लिए। बच्चे बड़े खुश हो गये थे कि अब स्कूल नहीं जाना और घृहकार्य भी नहीं करना। लेकिन कुछ दिन के बाद उन्हें पता चला कि स्कूल जाना ही बहतर थे क्योंकि कोरोणा ने बहुत ही बुरे तरीके से बच्चों को अपने घर के अंदर बाँध कर रख दी।

बहुत ही जल्द ऑनलैन क्लासे शुरू हो गये। माता-पिता को बिना चाहते हुए भी उन्हें मोबैल फोन देना पड़ा। बच्चों के मन मे तो, जब उनके हाथ में फोन थमा दिया गया था तब बस खुशी ही खुशी था। लेकिन मोबैल फोन ने अपना गुण पढ़ाई के द्वारा और

उसी तरह वह बच्चो के मन में उसके दोश को भी दिखा रहा था।

ओनलाइन खेल जैसे की पबजी, फ्रीफायर आदि के लत में आ गये बच्चे। बहुत ही गंभीर समस्या बन चुका थी मोबैल फोन और नव माध्यम उनके जिंदगी में। ओनलाइन खेल मे बच्चों ने पैसों का लेना देना करना शुरु कर दिया। माता पिता से बिना पुछे उनके इजाजत के बिना बच्चों ने दूसरे खिलाड़ियों को पैसा बेचना शुरू कर दिया और कुछ बच्चों के तो मृत्यु तक का भी कारण बना मोबैल फोन।

मोबैल फोन की लत लग गयी थी अधिकांश बच्चो को भी जब उन्हे उनके माँ-बाप फोन नही देते तब उन लोगों में एक अजीब तरीके का भर्ताव देखा जा सकता है। मोबैल फोन के न मिलने के कारण आत्महत्या और नशा जैसे मार्ग पर चलने की कोशिश तक की कुछ बच्चों ने। बहुत सारे बच्चों का इस समूह

में आत्महत्या होने का एक मुख्य कारण था मोबैल फोन। बच्चों के ज़िदगी में मोबैल फोन को सबसे ज्यादा ज़रूरी बना दिया कोविड़ नामक वैरस ने।

नव माध्यम बस बच्चों के जीवन में ही नही बल्की आजकल की युवाओं के और आम आदमी के जीवन में बहुत समस्या लाया पैसों का और जानकारियों का नष्ट बहुत ज्यादा स्वाभाविक बन गया कोविड़ के समय पर।

लोगों ने जीवन जीने का एक अलग और अनोखा तरीका सीखा। मास्क, सानिटैजर, फेस शील्ड जैसे चीजों का उपयोग हरेक व्यक्ति के लिए नया बन गया था। कोविड़ के काल में मास्क पहन-पहन कर आज एक ऐसी स्थिति बन गयी है की लोग बिना अपने मुह को मास्क से ढकाये वह बाहर निकल ही नही सकते हैं।

हरेक व्यक्ति जो है उसे छोटी सी एक खासी, बुखार, - इन सब चीज़ों से वह डरने लगा।

पढ़ने के ~~नय~~ एक नया तरीके 'विक्टेरस' नामक चानल और ऑनलैन क्लास के दवारा बच्चों को सीखने का और पढ़ने के अवसर मिला। लोगों ने कभी भी अपने ज़िदगी में सोचा तक नहीं होगा की वह बिना बाहर निकले, अपने दोस्तों से बिना मिले ~~स~~ कभी जी सकते है।

~~वे~~ विभिन्न प्रकार के कोरोणा टेस्ट जैसे आर. टी. पि. सी. आर और कोविड़ रापिड़ टेस्ट हरेक व्यक्ति के लिए एक नया अनुभव था।

घर में बैठी मम्मियों को जो कोई अन्य काम पर नहीं जाते उन्हें तो कोविड़ एक बहुत बड़ा परेशानी ही था। उन्हें हर रोज़ कुछ नया बनाना पड़ा और बच्चों को पूरे दिन के लिए

संभालना पड़ा । अगर देखा जाये तो माँ के जीवन कुछ खास बदलाव नही लाया कोरोना ने, लेकिन हरेक माँ के अंदर अपने बच्चों को लेकर, बुजुर्ग को लेकर और परिवार वालों को लेकर बेचैनी तो ज़रूर था।

लगभक एक साल के लिए जो लोकडौन हमारे ज़िदगी में आया उसके कई गुण भी थे। ~~लौक~~ लोकडौन के समय जब लोग अपने घर में थे तब कुछ नया करने का उत्साह और कुछ नया सीखने का इच्छा उनमें बड़ा ज़रूर। कुछ लोगों ने खाना पकाना, सीलना, झाडू-पोछा लगाना इन सब चीज़ों को सीखा।

अधिकांश लोगों ने भी अपने घर में या टेरस में खेती शुरू कर दी। मिट्टी के साथ मिलजुलकर एक जीवन बिताने का अवसर और ज़रूरत बहुत लोगों को

समझ में आया।

कोरोणा काल में एक दूसरा नया और आज के ज़माने सबसे ज़रूरतमन चीज़ को लोगों ने सीखा और वो था फिजुल खर्चों को रोकना। आम तौर पर हमारे समूह में बहुत सारे धूम-धाम से कार्यक्रम जैसे शादी, बड़ा राजमहल जैसा घर बनाना, बड़ा गाड़ी खरीदना यह सब ज्यादा था। लेकिन ~~कोरो~~ कोविड़ ने इन सब पर पाबंदी लगादी। जब हमारे समूह के आम आदमी वैसा बनाकर, कुछ उधार लेकर अपने ज़िदगी में धूम-धाम से कोइ शादी या अन्य कार्यक्रम बनाते ~~थे~~ थे। कोविड़ के समय पर शादी पर ज्यादा लोगों को प्रवेश करने पर पाबंदी लगा दी गयी थी।

जहाँ लोग हज़ारों लोगों को बुलाकर फिजुल खर्चा कर शादी या अन्य कार्यक्रम मनाते थे वही कोरोना के डर के कारण, लोगों को ज्यादा बुला नही पाए और

Item Code: 645 Participant Code: 102

सीधे-साधे तरीके से कोई भी कार्यक्रम को बिना किसी फिजुल खर्चा के करनै लोगों ने सीखा। बस 10-20 लोगों को बुलाकर कोई कार्यक्रम को रखना और मनाना लोगों ने सीखा।

मनुष्य एक के एक बहुत बुरी आदत फिजुल खर्चो पर कोविड़ ने एक पाबंधी लगा दी। घर में जब लोग यूटी बैठे थे तब उन्हे उनके परिवार के साथ समय बिताने के लिए एक अवसर मिला। लोग अपने घरों में आ गये थे और इसीके कारण लोगों को बात चीत करने का दूसरों को सुनने का एक अवसर मिला। ज्यादा तौर जो व्यक्ति काम करता है वह उसके नौकरी पर इतना व्यस्त हो जाता है कि परिवार के लिए अपने पत्नी, या पति, माँ-बाप और बच्चों के लिए वह समय ~~नही~~ नही बिता पाता। लेकिन इस कारण पर कोविड़ ने पाबंधि लगा दी। हरेक व्यक्ति को इतना समय मिला कि वह अपने परिवार

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

बहुत वक्त बिता सकें ।

लोगों केलिए एक नया ~~चीज~~ वाक्य ~~बना~~ 'क्वारंटाइन' बहुत ही ज्यादा इस्तेमाल किया जाता था । 'ऐसोलेशन' एक दूसरा ~~वाक्य~~ शब्द था जो लोगों के लिए बिलकुल नया था । लोगों ने आपसी दूरी बनाए रखने के लिए जो की एक सोचना का विषय तक नहीं था उनके कोविड़ के पहले के जीवन में ।

बहुत सारे लोगों का नौकरी नष्ट हो गया भारत में और भारत के बाहर भी । बहुत सारे भारतीय निवासियों को जो दूसरे देश में काम करते थे - उन्हें वापस आना पड़ा और वह भी ~~एक~~ बहुत सावधानी के साथ ।

भारत में पहला कोविड़ केस केरल में पाया गया था । पहले - पहले में तो लोग इससे इतना डरते थे कि कोविड़ रोगियों वह एक मनुष्य के तरह नहीं देखते

थे, कोई और अन्य गृह के जीवियों के समान देखा करते थे लेकिन आज बहुत कुछ सुधार आया है।

कोविड़ के समय पर अस्पताल जाने से हर कोई डरता था और हमारे अस्पतालों में तो चिकित्सा साधन भी ठंग से नही था।

हर रोज़ केरल निवासियों 6 बजे अपने मुख्य मंत्री के ~~वाता~~ वार्ता संमेलन सुनने के लिए बेचैन रहते थे कि आज कितने पासिटिव और नेगटिव केस और कितने लोगों को रोग छोड़कर चला गया।

हालांकी कोविड़ में जीवन के में बहुत सारे गुण और दोष दोनों आए। लेकिन फिरभी आज भी हमारे समाज कोविड़ के कुछ प्रभाव लोगों में से निकला नही है।

Item Code: 645 Participant Code: 102

कोरोणा के वजह से बहुत सारे स्वास्थय संबंधित रोग लोगों में शुरू हो गया जैसा श्वास लेने में तकलीफ, न्युमोणिय आदि।

बच्चों से आज भी मोबैल फोन की लत पूरे तरीके से छूटी नहीं हैं। आज ऑफलाइन क्लासेस के शुरू होने के बावजूद भी बच्चों को लत और ~~ब~~ भरताव पूरे तरीके से सुधरा नहीं।

कोविड़-19 आज भी हमारे समाज में हैं, सावधानी और भी हमें भरखनी होगी। बच्चे होने के नाते मोबैल फोन के लत से बाहर आना ज़रूरी हैं। मास्क और सानिटैज़र का इस्तमाल आज भी बहुत ज़रूरी हैं। आपसी दूरी, अपने आप को सुरक्षित रखना भी मत्पुर्त ज़रूरी हैं। फोन की ज़रूरत आज नहीं हैं। बिना फोन के भी जिंदगी गुज़र सकता हैं।

Item Code: 645 Participant Code: 102

" एक ~~निभ~~ इच्छा कुछ नही बदलता,
एक निर्णय थोड़ा कुछ बदल सकता है,
लेकिन एक दृढ़ निश्चय सब कुछ बदल
सकता है "

एक दृढ़ निश्चय जीवन में सब कुछ बदल सकता है। कोरोणा के दुशप्रभाव को अपने अंदर से निकालने का दृढ़ निश्चय वाकही हमारे ज़िंदगी में एक बहुत बड़ा बदलाव ला पाएगा। एक स्वच्छ, सुंदर और सुरक्षित समूह ही हमारा दृढ़ निश्चय होना चाहिए।